संपादकीय

मानसून केवल मौसम नहीं, हमारी तैयारी की भी परीक्षा है

भारत में मानसून केवल वर्षा का मौसम नहीं, बल्कि कृषि, अर्थव्यवस्था, जल सुरक्षा और शहरी प्रबंधन की वार्षिक परीक्षा भी है। देश की लगभग 52 प्रतिशत खेती आज भी वर्षा पर निर्भर है और करीब 60 करोड़ लोगों की आजीविका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मानसून से जुड़ी है। ऐसे में हर साल बारिश के साथ एक सवाल भी आता है—क्या हमने पानी को संभालने की तैयारी की या फिर एक बार फिर उसे बह जाने देंगे?

देश का सबसे बड़ा विरोधाभास यही है कि एक ओर कुछ क्षेत्रों में बाढ़ आती है तो दूसरी ओर कुछ ही महीनों बाद पेयजल संकट खड़ा हो जाता है। नीति आयोग पहले ही चेतावनी दे चुका है कि भारत के अनेक बड़े शहर गंभीर जल संकट की ओर बढ़ रहे हैं। इसका कारण केवल कम बारिश नहीं, बल्कि वर्षाजल के संरक्षण की विफल व्यवस्था है। भारत में हर वर्ष औसतन हजारों अरब घनमीटर वर्षाजल उपलब्ध होता है, लेकिन उसका बहुत बड़ा हिस्सा बिना उपयोग समुद्र में चला जाता है।

मध्य प्रदेश जैसे राज्य के लिए यह चुनौती और भी महत्वपूर्ण है। नर्मदा, ताप्ती, बेतवा, चंबल और सोन जैसी नदियों वाला प्रदेश होने के बावजूद कई जिलों में गर्मियों में पेयजल संकट पैदा हो जाता है। इसका सीधा अर्थ है कि समस्या पानी की उपलब्धता नहीं, बल्कि उसके प्रबंधन की है। अब समय आ गया है कि हर जिले के लिए अलग जल बजट तैयार किया जाए, जिसमें वर्षा, भूजल दोहन और जल संरक्षण का वार्षिक वैज्ञानिक आकलन अनिवार्य हो।

शहरों की स्थिति भी चिंताजनक है। कंक्रीट के बढ़ते जंगलों ने जमीन की जल सोखने की क्षमता को कम कर दिया है। नालों पर अतिक्रमण और तालाबों के भराव क्षेत्र में निर्माण के कारण कुछ घंटों की बारिश ही जलभराव को आपदा में बदल देती है। नगर निकायों की जवाबदेही तय होनी चाहिए कि हर वर्ष मानसून पूर्व सभी जल निकासी तंत्र का स्वतंत्र तकनीकी ऑडिट कराया जाए और उसकी रिपोर्ट सार्वजनिक की जाए। यह औपचारिकता नहीं, कानूनी दायित्व बनना चाहिए।

कृषि क्षेत्र में भी बदलाव की आवश्यकता है। कम पानी वाली फसलों को बढ़ावा देना, माइक्रो इरिगेशन को अनिवार्य प्रोत्साहन देना और प्रत्येक ग्राम पंचायत में खेत तालाबों तथा चेक डैम का भू-वैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर निर्माण करना अब विकल्प नहीं, आवश्यकता है। जल संरक्षण के कार्यों को केवल मनरेगा तक सीमित रखने के बजाय उन्हें दीर्घकालिक प्राकृतिक संपदा निर्माण कार्यक्रम से जोड़ा जाना चाहिए।

पर्यावरण के स्तर पर सबसे बड़ी जरूरत स्थानीय जलग्रहण क्षेत्रों और पारंपरिक जल स्रोतों के पुनर्जीवन की है। पिछले तीन दशकों में हजारों छोटे तालाब और प्राकृतिक नाले शहरी विस्तार की भेंट चढ़ गए। यदि प्रत्येक जिले में कम से कम 100 पारंपरिक जल संरचनाओं के पुनर्जीवन का समयबद्ध अभियान चलाया जाए तो भूजल स्तर में उल्लेखनीय सुधार संभव है। इसके साथ ही नदी किनारे हरित पट्टी विकसित करना और पहाड़ी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर स्थानीय प्रजातियों का पौधारोपण वर्षा जल के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

मानसून का स्वागत केवल पहली बारिश का आनंद लेकर नहीं, बल्कि हर बूंद को भविष्य की पूंजी मानकर करना होगा। जिस दिन भारत वर्षाजल को संग्रहित करने की संस्कृति विकसित कर लेगा, उसी दिन बाढ़ और सूखे का यह विरोधाभास काफी हद तक समाप्त हो जाएगा। प्रकृति हर वर्ष अपना दायित्व निभाती है, अब जिम्मेदारी हमारी है कि हम उसके उपहार को संसाधन में बदलें, समस्या में नहीं।

आजकल

मातृत्व का बाजारीकरण, नई मांओं की भावनाओं से खेलता वेलनेस उद्योग

दुनिया में हर साल लगभग 13 करोड़ महिलाएं मां बनती हैं, जबकि भारत में यह संख्या 2.7 करोड़ के करीब है। यह विशाल वर्ग अब वेलनेस इंडस्ट्री के लिए नया बाजार बन चुका है। प्रसव के बाद शारीरिक और मानसिक बदलावों से गुजर रही महिलाओं को महंगे विटामिन, स्पा, डिटॉक्स पैकेज और मातृत्व आरामगाह के नाम पर लाखों रुपये के पैकेज बेचे जा रहे हैं। न्यूयॉर्क, मालदीव और पेरिस जैसे शहरों में इनकी मांग तेजी से बढ़ी है। सवाल यह है कि यह वास्तविक देखभाल है या भावनात्मक शोषण।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि प्रसव के बाद हर महिला की रिकवरी अलग होती है, लेकिन वेलनेस उद्योग एक जैसी जरूरत का भ्रम पैदा कर रहा है। विज्ञापनों के जरिए यह संदेश दिया जाता है कि यदि विशेष क्रीम या सप्लीमेंट नहीं लिए गए तो मां या शिशु का स्वास्थ्य प्रभावित होगा। इस डर के सहारे मातृत्व को एक महंगे उत्पाद में बदला जा रहा है।

एशिया और दक्षिण अमेरिका में पारंपरिक घरेलू देखभाल, मालिश और परिवार का सहयोग वर्षों से नई मांओं की सबसे बड़ी ताकत रहा है। इसके विपरीत पश्चिमी देशों में सामुदायिक सहयोग की जगह महंगी सेवाओं ने ले ली है और यही मॉडल अब भारत के महानगरों तक पहुंच रहा है। जबकि विशेषज्ञ मानते हैं कि प्रसव के बाद महिलाओं को सबसे अधिक जरूरत सामाजिक सहयोग, पर्याप्त विश्राम और मानसिक संबल की होती है।

सरकार को मातृत्व लाभ, आशा कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण और प्रसवोत्तर मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं पर अधिक निवेश करना चाहिए। परिवारों को भी समझना होगा कि महंगा पैकेज प्रेम का प्रमाण नहीं होता। नई मांओं को यह विश्वास दिलाना जरूरी है कि थकी हुई और संघर्ष करती मां भी उतनी ही सक्षम और आदर्श होती है। मातृत्व उत्सव है, उपभोक्ता बाजार का उत्पाद नहीं। यदि समय रहते इस प्रवृत्ति पर अंकुश नहीं लगाया गया तो मातृत्व का सबसे पवित्र अनुभव भी बाजारवाद की चकाचौंध में खो जाएगा।

करप्शन हटाने कहीं करप्ट के साथ तो नहीं ?

कॉकरोच पार्टी की नींव में राजनीतिक दलों का टूल तो नहीं ?

भारत में कॉकरोच अगेंस्ट इंडिया मूवमेंट शुरू हो रहा है। कॉकरोच जनता पार्टी बनाने वाले अभिजीत दीपके अमेरिका से डिपोर्ट कर दिए गए हैं। दिल्ली पहुंचते ही उन्होंने आंदोलन की शुरुआत कर दी है। उनके प्रवक्ता बने जो भी चेहरे अभी सामने आए हैं, वे सभी आम आदमी पार्टी से जुड़े रहे हैं। अरविंद केजरीवाल के वालंटियर भी इनमें दिखाई पड़ रहे हैं। समस्याओं के समाधान के लिए आंदोलन लोकतंत्र की बुनियाद है, लेकिन आंदोलन के नाम पर प्रायोजित राजनीति उसका दुरुपयोग है। कॉकरोच जनता पार्टी वर्चुअल वर्ल्ड से निकलकर मूवमेंट में उतर रही है। उसका पूरा टूलकिट आम आदमी पार्टी से मिलता-जुलता लगता है। समय के साथ यह साबित भी होगा। पंजाब में अगले साल चुनाव हैं। दिल्ली की सत्ता तो केजरीवाल के हाथ से फिसल चुकी है। पंजाब में चुनाव जीतने के लिए माहौल बनाने की शुरुआत हो गई है। उनकी सरकारों का जो प्रदर्शन रहा है, उसके बाद करप्शन अगेंस्ट इंडिया मूवमेंट चलाने की हिम्मत करना उनके बूते की बात नहीं है।

जिस आंदोलन से केजरीवाल को सत्ता मिली, राज्यों में सरकारें बनीं और जिस अन्ना हजारे का उन्हें सहारा मिला, वह सब अब पीछे छूट चुका है। भ्रष्टाचार के आरोप में स्वयं केजरीवाल को जेल जाना पड़ा। अब आंदोलन के टूलकिट से करप्शन अगेंस्ट इंडिया की आवाज नहीं आ रही है। उसने कॉकरोच जनता पार्टी का नया चेहरा बना लिया है। जिसने सोशल मीडिया पर यह पार्टी बनाई, उसने पहले दिन से ही कानून के विरुद्ध काम किया।

अभिजीत दीपके अमेरिका स्टूडेंट वीजा पर गए हुए थे। ऐसे वीजा पर किसी भी प्रकार की राजनीतिक गतिविधि में शामिल नहीं हुआ जा सकता। उनके इस अवैध कार्य के कारण अमेरिकी प्रशासन ने उन्हें डिपोर्ट कर दिया। जो स्वयं नियमों का उल्लंघन करने का आदी है, वह युवाओं को नियमों के पालन का आंदोलन करने की बात करता है। फिर भी उनकी नीयत पर हम अभी सवाल नहीं उठाते। वे अपने हर वीडियो में कह रहे हैं कि केंद्रीय शिक्षा मंत्री से इस्तीफा लेना उनके आंदोलन का एजेंडा है। युवाओं की

समस्याओं का समाधान उनका एजेंडा नहीं है। उनका एजेंडा राजनीतिक प्रतीत होता है।

नीट, सीबीएसई और दूसरी परीक्षाओं को लेकर जो भी सवाल हैं, उन पर सरकार न केवल संवेदनशील दिख रही है, बल्कि व्यवस्था में सुधार की दिशा में भी कदम उठा रही है। नीट की आगामी परीक्षा के लिए वायु सेवा तक का उपयोग करने की बात हो रही है।

अभिजीत दीपके यह नहीं बताते कि उनकी फंडिंग कहां से हो रही है। कुछ भी लंबे समय तक छिपा नहीं रहता, सब सामने आ ही जाता है। करप्शन अगेंस्ट इंडिया मूवमेंट का जिस तरह लाभ उठाकर राजनीतिक सत्ता हासिल की गई और उसके बाद भ्रष्टाचार के आरोप लगे, वैसा ही उद्देश्य कॉकरोच मूवमेंट का भी प्रतीत होता है। यह आंदोलन युवाओं के कल्याण के लिए नहीं, बल्कि एंटी इंडिया एजेंडे की ओर झुका हुआ लगता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में किसी भी सरकार को मिले जनादेश से अधिक उसके विरोध में राय रखने वाले लोग होते हैं। यह लोकतंत्र की एक स्वाभाविक कमजोरी भी है। वर्तमान राजनीतिक स्थिति में मुकाबला बीजेपी बनाम अन्य दलों का बन गया है। बीजेपी का विरोध विचारधारा के स्तर पर है, नीतियों के स्तर पर नहीं। ऐसा इसलिए कहा जा रहा है क्योंकि नीतियों को लेकर किसी भी विपक्षी दल ने कोई ठोस विकल्प प्रस्तुत नहीं किया है।

चुनावी राजनीति में लगभग सभी दल राज्य दर राज्य पराजित हो रहे हैं। इसलिए अब उन्हें बीजेपी सरकार को सत्ता से हटाने का कोई स्पष्ट रास्ता दिखाई नहीं पड़ रहा है। बांग्लादेश और नेपाल में जेनरेशन-ज़ेड से जुड़े आंदोलनों के बाद हुए राजनीतिक बदलावों में उन्हें अपने लिए उम्मीद दिखाई देती है। लेकिन जो लोग इससे आशा लगाए बैठे हैं, वे शायद यह भूल रहे हैं कि उन दोनों देशों में सबसे ज्यादा हमला विपक्षी राजनीति के नेताओं पर ही हुआ था। बीजेपी की सरकार एक दशक से केंद्र में है। जिन दलों ने कई दशकों तक देश पर शासन किया, उनके खिलाफ जनाक्रोश का परिणाम ही बीजेपी का सत्ता में आना था। यदि उस आक्रोश को भड़काने की कोशिश की जाएगी तो उसका पहला खामियाजा उन्हीं नेताओं को भुगतना पड़ेगा, जो इसे हवा देने में लगे हैं।

अरविंद केजरीवाल ही नहीं, कॉकरोच जनता पार्टी से राहुल गांधी ने भी कई उम्मीदें पाल रखी हैं। उनका यह बयान कि देश में आर्थिक सुनामी आने वाली है, मोदी के खिलाफ संस्थागत विद्रोह हो रहा है और एक साल में मोदी प्रधानमंत्री नहीं रहेंगे, उसी टूलकिट का हिस्सा प्रतीत होता है जिसमें यह कल्पना की जा रही है कि कॉकरोच जनता पार्टी युवाओं को एकजुट कर बड़ा आंदोलन खड़ा करेगी और फिर भारत में भी बांग्लादेश तथा नेपाल जैसे हालात बन जाएंगे। कॉकरोच जनता पार्टी की नीयत देशहित में नहीं दिखती। इसलिए इसका हश्र भी वैसा ही हो सकता है जैसा 'चौकीदार चोर है', हिंडनबर्ग रिपोर्ट और वोट चोरी जैसे अभियानों का हुआ। सोशल मीडिया और देश की जमीनी राजनीति के बीच अब भी बड़ा अंतर है। ऐसा कहा जा रहा है कि सोनम वांगचुक का समर्थन भी कॉकरोच जनता पार्टी के आंदोलन को मिल गया है। शाहीन बाग भी ऐसा ही एक आंदोलन था। सरकार ने पूरा धैर्य दिखाया और धीरे-धीरे जब तमाम तथ्य सामने आए तो वह आंदोलन अपने आप समाप्त हो गया। युवाओं की समस्याओं का समाधान जरूरी है। पेपर लीक की घटनाओं पर रोक लगना भी बेहद आवश्यक है। देश पेपर लीक जैसी घटनाओं का दर्द एक बार झेल सकता है, लेकिन यदि उसके बहाने कोई एंटी इंडिया मूवमेंट खड़ा करने का प्रयास करता है तो उसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। मुगल आक्रांता जो नहीं कर पाए और अंग्रेज भी अनेक प्रयासों के बावजूद भारत को नहीं डिगा पाए, वह काम इस तरह के आंदोलनों से भी संभव नहीं होगा।

बीजेपी से लड़ना है तो राजनीतिक रूप से लड़ना होगा। युवाओं के कंधों पर सोशल मीडिया के वर्चुअल संसार का उपयोग कर एंटी इंडिया मूवमेंट खड़ा करने का प्रयास कभी सफल नहीं हो पाएगा। देश का युवा सब समझता है।

(नईदुनिया संपादकीय डेस्क)

भाजपा से बगावत : 'वी द लीडर्स' की दस्तक

अन्नामलाई का नया दांव दक्षिण की राजनीति को कितना प्रभावित करेगा

तमिलनाडु की राजनीति में शुक्रवार, 06 जून 2026 को भूचाल आ गया, जब भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने प्रदेश के पूर्व अध्यक्ष के. अन्नामलाई का इस्तीफा मंजूर कर लिया। इसके साथ ही अन्नामलाई ने 'वी द लीडर्स' नाम से नया आंदोलन शुरू करने का ऐलान कर दिया। उनका दावा है कि यह आंदोलन भविष्य में राजनीतिक दल बनेगा और अगले विधानसभा चुनाव में ताल ठोकेगा। इस्तीफे के कुछ ही घंटों में 7 लाख से ज्यादा लोग ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर इससे जुड़ गए। अन्नामलाई के साथ उपाध्यक्ष करुणा नागराजन और सचिव सुमति वेंकटेश ने भी भाजपा छोड़ दी। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष नैनार नागेंद्रन ने भले कहा कि भाजपा को कोई नुकसान नहीं होगा, परंतु दक्षिण भारत की राजनीति के जानकार इसे साधारण बगावत नहीं मान रहे। यह उप-राष्ट्रवाद और राष्ट्रवाद के बीच नया 'सेंटर-राइट' स्पेस बनाने की कोशिश है, जहां 1967 के बाद द्रमुक और अन्नाद्रमुक के बाहर तीसरी ताकत कभी स्थायी रूप से नहीं बन पाई।

भाजपा छोड़कर दल बनाने वाले अन्नामलाई अकेले नहीं हैं। कल्याण सिंह ने 1999 में राष्ट्रीय क्रांति पार्टी बनाई, उमा भारती ने 2005 में भारतीय जनशक्ति पार्टी, बी.एस. येदियुरप्पा ने 2012 में कर्नाटक जनता पक्ष, बाबूलाल मरांडी ने 2006 में झारखंड विकास मोर्चा, शंकर सिंह वाघेला ने 1996 में राष्ट्रीय जनता पार्टी, यशवंत सिन्हा ने 2018 में भारतीय सब लोग पार्टी और केशुभाई पटेल ने 2012 में गुजरात परिवर्तन पार्टी बनाई। परंतु नतीजा यह रहा कि ज्यादातर को अपेक्षित सफलता नहीं मिली। कल्याण सिंह, उमा भारती, येदियुरप्पा, मरांडी और केशुभाई वापस भाजपा लौट आए। कारण स्पष्ट है—भाजपा का कैडर, संघ का नेटवर्क और मोदी-शाह की चुनावी मशीनरी के सामने क्षेत्रीय दल लंबी रेस नहीं लड़ पाए।

कर्नाटक कैडर के 2011 बैच के आईपीएस अधिकारी के. अन्नामलाई ने 2019 में नौकरी छोड़ भाजपा जॉइन की। 2021 में वे तमिलनाडु भाजपा अध्यक्ष बने। 'सिंगम अन्नामलाई' के नाम से मशहूर इस 41 वर्षीय नेता ने द्रमुक, भ्रष्टाचार, सनातन विरोध और तमिल अस्मिता के मुद्दों पर आक्रामक राजनीति की। 2024 लोकसभा चुनाव में भाजपा का वोट शेयर 11 प्रतिशत तक पहुंचाया, जो जयललिता युग के बाद सर्वाधिक था। उन्होंने 'एन मन, एन मक्कल' पदयात्रा से ग्रामीण युवाओं में पैठ बनाई। परंतु राष्ट्रीय नेतृत्व

से टकराव, टिकट वितरण में हस्तक्षेप और 'हिंदी थोपने' के आरोपों पर पार्टी लाइन से अलग बयान उनके इस्तीफे की जमीन पहले ही तैयार कर चुके थे।

अन्नामलाई ने अपनी विचारधारा स्पष्ट करते हुए कहा कि जब भारत विकसित राष्ट्र बनेगा, तब तमिलनाडु का शीर्ष पर होना जरूरी है। तमिल और भारतीय पहचान के बीच अनावश्यक टकराव पैदा किया गया है, जबकि दोनों एक साथ रह सकते हैं। यह बयान सीधे द्रमुक के 'द्रविड़ मॉडल' और भाजपा के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, दोनों को चुनौती देता है। उनका फोकस तीन बिंदुओं पर है—तमिल गौरव, जिसमें जल्लीकट्टू, कीलाडी उत्खनन और तमिल को केंद्र की नौकरियों में प्राथमिकता शामिल है; भ्रष्टाचार विरोध, जिसमें द्रमुक के पहले परिवार और भाजपा के ठेकेदार राज दोनों पर हमला है; तथा जीएसटी, नीट और वित्तीय आवंटन में राज्यों के अधिकारों की मांग।

2024 के बाद भाजपा ने 'लुक साउथ' नीति तेज की थी और अन्नामलाई उसका प्रमुख चेहरा थे। उनके जाने से तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और केरल में स्थानीय नेताओं का मनोबल प्रभावित हो सकता है। दिल्ली से पैराशूट नेतृत्व का आरोप भी गहरा सकता है। 2029 के लिए 129 लोकसभा सीटों वाले दक्षिण भारत में भाजपा की राह कठिन हो सकती है। यह उप-राष्ट्रवाद और राष्ट्रवाद के बीच नया 'सेंटर-राइट' स्पेस बनाने की कोशिश है, जो 1967 के बाद द्रमुक-अन्नाद्रमुक के बाहर तीसरी ताकत बनने का प्रयास कर रहा है।

परंतु तमिलनाडु की परिस्थितियां अलग हैं। यहां भाजपा की जड़ें अभी कमजोर हैं। 2021 विधानसभा चुनाव में उसे 4 सीटें मिलीं और 2024 लोकसभा चुनाव में खाता भी नहीं खुला। द्रविड़ दलों का 60 वर्ष पुराना सामाजिक-राजनीतिक तंत्र मौजूद है। ऐसे में अन्नामलाई के पास 'लूज-लूज' नहीं, बल्कि 'विन-विन' का अवसर है। यदि वे द्रमुक विरोधी राजनीतिक स्पेस पर कब्जा कर लेते हैं, तो 2026 विधानसभा चुनाव में 'किंगमेकर' की भूमिका निभा सकते हैं।

दक्षिण की राजनीति पर इसके तीन संभावित असर हो सकते हैं। पहला, द्रमुक-अन्नाद्रमुक ध्रुवीकरण में सेंध। द्रमुक के पास 26 प्रतिशत और अन्नाद्रमुक के पास 20 प्रतिशत कोर वोट है। भाजपा का 11 प्रतिशत वोट हिंदुत्व और मोदी के नाम पर है। यदि अन्नामलाई तमिल अस्मिता, स्वच्छ छवि और मोदी से दूरी का संतुलित मिश्रण तैयार करते हैं, तो शहरी युवा, पहली बार मतदान करने वाले और द्रमुक विरोधी नाडार-वन्नियार समुदाय उनकी ओर आकर्षित हो सकते हैं। 5 से 7 प्रतिशत वोटों का भी स्थानांतरण त्रिशंकु विधानसभा की स्थिति बना सकता है।

दूसरा असर राष्ट्रीय राजनीति में संघीय दलों के उभार के रूप में सामने आ सकता है। ममता बनर्जी, स्टालिन, केजरीवाल और अन्नामलाई जैसे नेता 'दिल्ली बनाम राज्य' की बहस को और तेज कर सकते हैं। नीट, यूसीसी और परिसीमन जैसे मुद्दों पर 'वी द लीडर्स' जैसा मंच गैर-कांग्रेसी और गैर-भाजपा तीसरे मोर्चे की संभावनाओं को बल दे सकता है। हालांकि भीड़ से वोट तक का सफर आसान नहीं होता। 7 लाख ऑनलाइन समर्थक वोट में तब्दील नहीं होते। पार्टी के लिए संगठन, बूथ प्रबंधन, फंड और जातीय समीकरण जरूरी होते हैं। द्रमुक के पास 2जी से लेकर जल्लीकट्टू तक का नैरेटिव है, जबकि अन्नाद्रमुक के पास एमजीआर और जयललिता की विरासत है। अन्नामलाई के पास फिलहाल गुस्सा है, व्यवस्था नहीं। दूसरी चुनौती भाजपा का 'वॉशिंग मशीन' नैरेटिव है, जहां वापस लौटने वाले नेताओं के मामलों के बंद होने की चर्चा होती रही है। अन्नामलाई पर आय से अधिक संपत्ति का मामला भी लंबित है। तीसरी चुनौती तमिलनाडु में हिंदी विरोध की भावना है। यदि अन्नामलाई अत्यधिक राष्ट्रीय छवि अपनाते हैं तो द्रमुक उन्हें आरएसएस की 'बी-टीम' बताएगी, और यदि वे अत्यधिक क्षेत्रीय रुख अपनाते हैं तो भाजपा का कोर वोट उनसे दूर हो सकता है।

2026 तय करेगा कि अन्नामलाई आंधी हैं या केवल आहट। 1967 में अन्नादुरै ने कांग्रेस को सत्ता से बाहर किया था। अब सवाल यह है कि 2026 में अन्नामलाई क्या करेंगे। वे कल्याण सिंह की तरह वापसी करेंगे, येदियुरप्पा की तरह लौटकर फिर सत्ता हासिल करेंगे या एमजीआर की तरह अपना अलग राजनीतिक इतिहास रचेंगे। दक्षिण की राजनीति विचार से कम और अस्मिता से अधिक संचालित होती है। अन्नामलाई ने 'तमिल फर्स्ट, इंडियन नेक्स्ट' का जो दांव चला है, वह द्रमुक के द्रविड़ विमर्श और भाजपा के हिंदुत्व विमर्श, दोनों में सेंध लगाने की क्षमता रखता है। यदि 'वी द लीडर्स' अगले 10 महीनों में बूथ स्तर तक पहुंच गया तो तमिलनाडु की राजनीति त्रिकोणीय हो सकती है, अन्यथा यह भी एक और राजनीतिक बगावत की फाइल में दर्ज होकर रह जाएगी। फिलहाल इतना तय है कि 'सिंगम' ने दहाड़ लगा दी है। अब देखना यह है कि जंगल का राजा कौन बनता है। दक्षिण की सियासत करवट ले रही है और दिल्ली से चेन्नई तक सभी की नजर अन्नामलाई पर टिकी हुई है। तमिलनाडु के पूर्व भाजपा अध्यक्ष ने अलग राह चुन ली है। 7 लाख समर्थक कुछ ही घंटों में उनके साथ जुड़े हैं और द्रविड़ राजनीति, राष्ट्रीय दलों तथा तमिल अस्मिता के बीच त्रिकोणीय टकराव के स्पष्ट संकेत दिखाई देने लगे हैं।

(नईदुनिया संपादकीय डेस्क)

84 महादेव दर्शन यात्रा | 84/35 श्री इंद्रेश्वर महादेव

'ज्ञान, बुद्धि, न्याय और धर्मसम्मत सत्ता का दिव्य संदेश'

डॉ. नवीन आनंद जोशी

उज्जयिनी के पावन महाकाल वन में स्थित श्री इंद्रेश्वर महादेव का स्वरूप केवल एक शिवलिंग नहीं, बल्कि धर्म, न्याय, ज्ञान और ईश्वरीय कृपा के गहन रहस्य का प्रतीक है। यहां विराजमान भगवान शिव की महिमा एक ऐसी कथा से जुड़ी है, जो बताती है कि जब मनुष्य ज्ञान, बुद्धि और धर्म का आश्रय लेता है, तब खोया हुआ सम्मान, अधिकार और पद भी पुनः प्राप्त हो सकता है।

पुराणों के अनुसार प्रजापति त्वष्टा के पुत्र कुषध्वज अत्यंत धर्मनिष्ठ, दानी और सदाचारी थे। वे लोककल्याण के कार्यों में निरंतर लगे रहते थे। एक समय ऐसा आया जब देवराज इंद्र द्वारा उनका वध कर दिया गया। अपने पुत्र के वियोग से दुःखी और क्रोधित होकर प्रजापति त्वष्टा ने अपनी जटा से एक बाल निकालकर अग्नि में समर्पित किया। उनके तप और संकल्प की शक्ति से अग्नि से एक महाबली दैत्य उत्पन्न हुआ, जिसे वृत्रासुर कहा गया।

प्रजापति की आज्ञा से वृत्रासुर ने देवताओं के साथ युद्ध किया। उसके अद्भुत पराक्रम के सामने देवसेना टिक न सकी। देवराज इंद्र पराजित होकर बंधक बना लिए गए और वृत्रासुर ने स्वर्ग पर अधिकार स्थापित कर लिया। यह प्रसंग हमें स्मरण कराता है कि संसार में कोई भी पद, शक्ति या सत्ता स्थायी नहीं है। जब कर्मों का संतुलन डगमगाता है, तब परिस्थितियां भी बदल जाती हैं।

कुछ समय पश्चात आदरणीय देवगुरु बृहस्पति वहां पहुंचे। उन्होंने अपने ज्ञान, धैर्य और दिव्य बुद्धि से देवराज इंद्र को बंधनों से मुक्त कराया। मुक्त होने के बाद इंद्र ने विनम्रतापूर्वक पूछा कि वे पुनः स्वर्ग की प्राप्ति कैसे कर सकते हैं। तब देवगुरु बृहस्पति ने उन्हें महाकाल वन में स्थित भगवान शिव की आराधना का उपदेश दिया। उन्होंने कहा कि खंडेश्वर महादेव के दक्षिण में विराजित दिव्य शिवलिंग का श्रद्धा और समर्पण के साथ पूजन करें।

देवराज इंद्र ने भगवान शिव की आराधना आरंभ की। उनकी तपस्या और भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान महादेव प्रकट हुए और उन्हें वरदान दिया कि वे शिवकृपा के प्रभाव से वृत्रासुर का सामना करें तथा विजय प्राप्त करें। महादेव के आशीर्वाद से इंद्र ने पुनः युद्ध किया,

वृत्रासुर का वध किया और स्वर्ग पर अपना अधिकार पुनः स्थापित किया। देवराज इंद्र द्वारा पूजित होने के कारण यह शिवलिंग 'श्री इंद्रेश्वर महादेव' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह कथा केवल एक ऐतिहासिक या पौराणिक घटना नहीं है, बल्कि गहन आध्यात्मिक दर्शन भी प्रस्तुत करती है। इंद्रेश्वर महादेव का क्रमांक 35 विशेष रूप से चिंतन का विषय है। अंक 3 को ज्ञान का और अंक 5 को बुद्धि, विवेक तथा कर्मकुशलता का प्रतीक माना जा सकता है। जब ज्ञान और बुद्धि का समन्वय होता है, तब उनका योग 8 बनता है।

अंक 8 न्याय, संतुलन, उत्तरदायित्व और धर्मसम्मत सत्ता का प्रतीक माना जाता है। इस कथा में भी यही सत्य दिखाई देता है। जब संतुलन भंग हुआ तो स्वर्ग का अधिकार छिन गया, और जब ज्ञान, विवेक तथा भगवान शिव की कृपा का संगम हुआ, तब न्याय की पुनः स्थापना हुई। इस प्रकार अंक 8 हमें यह स्मरण कराता है कि वास्तविक सत्ता वही है जो धर्म और न्याय पर आधारित हो। इस कथा में आदरणीय देवगुरु बृहस्पति ज्ञान के स्वरूप हैं। प्रथम पूज्य भगवान श्री गणपति बुद्धि, विवेक और विघ्नों के नाश के अधिष्ठाता हैं। जब बृहस्पति का ज्ञान और गणपति की बुद्धि, भगवान महाकाल के आशीर्वाद से संयुक्त होती है, तब जीवन में वह सामर्थ्य उत्पन्न होता है जो मनुष्य को उसके योग्य स्थान तक पहुंचाती है। ऐसा स्थान केवल भौतिक पद नहीं होता, बल्कि सम्मान, प्रतिष्ठा, नेतृत्व और लोककल्याण की जिम्मेदारी का भी प्रतीक होता है।

आज के युग में भी श्री इंद्रेश्वर महादेव की यह कथा उतनी ही प्रासंगिक है। यह हमें सिखाती है कि संकट कितना भी बड़ा क्यों न हो, यदि गुरु का मार्गदर्शन, बुद्धि का प्रकाश और भगवान की कृपा प्राप्त हो जाए, तो पराजय को विजय में बदला जा सकता है। अहंकार से नहीं, बल्कि विनम्रता, श्रद्धा और धर्म से स्थायी सफलता प्राप्त होती है।

श्री इंद्रेश्वर महादेव का संदेश स्पष्ट है—ज्ञान दिशा देता है, बुद्धि निर्णय देती है, न्याय अधिकार प्रदान करता है और भगवान महाकाल की कृपा उस अधिकार को स्थिर करती है। जो भक्त श्रद्धापूर्वक श्री इंद्रेश्वर महादेव का पूजन करता है, वह केवल पापों से ही मुक्त नहीं होता, बल्कि उसके जीवन में न्याय, संतुलन, सम्मान और धर्मसम्मत उन्नति के द्वार भी खुलते हैं। यही इंद्रेश्वर महादेव की दिव्य महिमा और उनकी कथा का शाश्वत संदेश है।

श्रृंखला निरंतर जारी...